Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
July 2024 5(7), 1805–1809

THE INFLUENCE OF WESTERN CIVILIZATION ON THE FEMALE CHARACTERS IN MANNU BHANDARI'S STORIES

मन्नू भंडारी की कहानियों के स्त्री पात्रो पर पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव

Shweta Bajaj [1], Shalini Bardole [2]

[1] Researcher, Dr. A.P.J. Abdul Kalam University, Indore, India
[2] Research Director, Dr. A.P.J. Abdul Kalam University, Indore, India

ABSTRACT

English: Mannu Bhandari is held in high regard among female storytellers in Indian fiction who are considered to have untangled the innermost psyche of women. She has consistently created new characters. Her openness and openness regarding women's portrayals, along with questions of identity and liberation, have been integral to Mannu Bhandari's creative work. Mannu Bhandari has written numerous works using the domestic woman as a medium. She has explored various moral, social constraints, and limitations related to women's lives. Her fiction reflects a social consciousness. Through her works, she has revealed various layers of women's liberationist consciousness. Mannu Bhandari has given voice to the pain, struggle, and suffering of lower- and middle-class rural and urban women.

To what extent are Mannu Bhandari's female characters adopting Western styles? While steeped in their Indian culture, they are also assimilating into Western culture. They are moving forward, transcending their boundaries. But a woman crosses boundaries only when she is shaken. An Indian woman transgresses and challenges society only after being broken from within. We are all experienced and know that even an insect doesn't bite unless we disturb it. Similarly, when a woman goes astray, she takes everything away.

Yogita Yadav, speaking about the impact of Mannu Bhandari's writings, says, "Women of my time are so independent that they can make any decision for themselves. But your Bunty's Bunty holds my pallu and stops me. He inspires me to be more restrained, more patient. Because we have to save something for our next generation. Who else but Mannu ji could have said this?"

Yogita Yadav - In emotional tribute articles

Hindi: भारतीय कथा साहित्य में जिन स्त्री कथाकारो को स्त्री के मन की गांठ खोल देने वाला कहा जाता है, उनमें मन्नू भंडारी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने सदैव नए-नए चरित्रो को गड़ा। अस्मिता और मुक्ति के सवाल के साथ स्त्री चित्रों को लेकर निर्भीकता और खुलापन मन्नू भंडारी की रचना कर्म का अभिन्न अंग रहा है। मन्नू भंडारी ने घरेलू नारी को माध्यम बनाकर कई रचनाओं को लिखा। मन्नू भंडारी ने नारी जीवन से सबंधित अनेक नैतिक, सामाजिक बंधनो और सीमाओं का अन्वेषण किया है। उनके कथा साहित्य में सामाजिक बोध दिखाई देता है। उन्होंने अपनी रचनाओं के द्वारा स्त्री की मुक्तिवादी चेतना की विभिन्न परतों को खोला है। निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग की ग्रामीण और शहरी स्त्री जिंदगी की व्यथा, संघर्ष और भोगी हुई पीड़ा को मन्नू भंडारी ने स्वर दिया है।

मन्नू भंडारी के स्त्री पात्र किस हद तक पाश्चात्य शैली को अपना रहे, वे अपने भारतीय सभ्यता में डूबे हुए होने के साथ-साथ पाश्चात्य सभ्यता में घुल रहे है। अपनी सीमाओं का उलंघन करते हुए आगे बढ़ रहे है। किन्तु एक स्त्री तब ही सीमा लांघती है, जब उसको झकझोरा जाता है। भारतीय स्त्री अंदर से टूटने के बाद ही उलंघन करती है और समाज को चुनौती देती है। हम सभी अनुभवी है और जानते है एक कीट भी तब तक नहीं काटता जब तक हम उसे परेशान न करे। ठीक इसी प्रकार स्त्री भी बिगड़ जाती है तब सब बहा ले जाती है।

योगिता यादव मन्नू भंडारी के लेखन से पड़ने वाले असर पर बताती हैं, “मेरे समय की स्त्री इतनी आत्मनिर्भर है कि वह अपने लिए कोई भी फैसला ले सकती है. पर आपका बंटी का बंटी मेरा पल्लू पकड़ कर रोक लेता है. वह

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i7.2024.6545

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

मुझे कुछ और संयमशील, कुछ और धैर्यवान बनने के लिए प्रेरित करता है. क्योंकि हमें अपनी अगली पीढ़ी के लिए भी कुछ बचाकर रखना है. यह मन्नू जी के अलावा कौन कह सकता था"
योगिता यादव - भावपूर्ण श्रदांजलि लेखो में

1. प्रस्तावना

पाश्चात्य संस्कृति से तात्पर्य शिक्षा की व्यापकता, सामाजिक सुरक्षा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विवाह सम्पनता, वेशभूषा, पार्टिया, रिश्ते नाते, व्यवहार स्वतंत्रता, बोलचाल की भाषा आदि से हैं। मन्नू भंडरी ने अपनी कहानियो मे जिन पात्रो का सृजन किया है वे स्त्री पात्र अधिकांश शिक्षित हैं। मन्नू जी के स्त्री पात्र अधिकतर कार्यरत है। वे किसी पर आधारित न होकर स्वावलम्बी हैं। कहानियों की नारी किसी की दया धर्म पर पलने वाली नहीं, वे स्वयं पर विश्वास रखती है।

2. पाश्चात्य सभ्यता में रंगे पात्र

'ईशा के घर इंसान' की 'एंजिला' बंधनो को तोड़नेवाली विद्रोहशील नारी है। वह किसी के इशारो पर नाचने वाली नहीं है। वह अपने निर्णय स्वयं लेती है। 'गीत का चुम्बन' कहानी की 'कनिका' भी बदलते परिवेश की स्त्री है। आज के समय मे विवाह पूर्व प्रेम करना पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव को दर्शाता है। भारतीय संस्कृति में विवाह पूर्व प्रेम को अनुमति नहीं दी जाती। 'जीती बाजी की हार' की 'मुरला' विवाह नहीं करना चाहती। आज हमारे समाज मे आर्थिक आत्मनिर्भरता के कारण स्त्री विवाह को आवश्यक नहीं मानती। मुरला जैसी पढ़ी लिखी युवतियां विवाह को एक संस्कार न मानकर बंधन समझती है। विवाह उन्हें पाँव मे बंधी बेड़ियों के समान लगता हैं। आज की कामकाजी नारी दाम्पत्य जीवन की व्यवस्था को नकार कर अकेले जीवन जीना चाहती है। 'एक कमजोर लड़की की कहानी' की 'रूप' भले ही कहानी के अंत तक कमजोर पड़ गयी हो परन्तु उसके स्वभाव मे विद्रोही प्रवृति है। शादी के पश्चात भी वह अपने पूर्व प्रेमी 'ललित' के साथ भाग जाने को तैयार है। भारतीय संस्कारो मे विवाह के पश्चात् पर पुरुष के बारे मे सोचना भी अनैतिक है। परन्तु पाश्चात्य संस्कृति मे ऐसा कुछ नहीं है जिससे मन मिले उसके साथ ही हो लो। रूप पर भी पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव दिखाई पड़ता है तब ही तो रूप भाग जाने की पूरी तैयारी कर लेती है। 'अभिनेता' कहानी की 'रंजना' अभिनय के क्षेत्र मे कार्यरत है। नारी प्राचीन समय की भाँती सिर्फ चूल्हे चैके तक सिमित नहीं है वह भी घर की चारदीवारी से बाहर निकल कर कार्यरत है। अभिनय के क्षेत्र मे कार्य करने वाली रंजना पुरुषो के द्वारा छली गई है, जो कि पाश्चात्य संभ्यता को दर्शाता है। प्रेम जैसे मानवमूल्य का अवमूल्यन लाभलोभ पर आधारित मौजूदा व्यवस्था के कारण ही तो होता है। आज के समय मे भारतीय नारी पाश्चात्य संभ्यता के प्रभाव के कारण सामाजिक, रूढ़िगत, नैतिकता को नकार कर वैयक्तिक आवश्यकताओं को अधिक महत्त्व देने लगी हैं। नारी पति के अन्याय अत्याचारों का विरोध कर सम्बन्ध विच्छेद करने मे पीछे नहीं हटती। 'दीवार, बच्चे और बरसात' की नायिका किराएदारिनी पढ़ी लिखी नारी है, जो कि अत्याचार को सहन नहीं करती। वह कह उठती है - " आज इनसे साफ - साफ कह दीनी, चलो किस्सा खतम।" परम्परागत समय मे भारतीय नारी सम्बन्ध विच्छेद के बारे मे कदाचित नहीं सोचती थी, परन्तु आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से नारी सर्वप्रथम अपने बारे मे विचारती है।[1]

'कील और कसक' कहानी मे दाम्पतय जीवन मे यौन संतुष्टि को जीवन का महत्वपूर्ण मूलाधार माना गया है। पाश्चात्य दाम्पत्य जीवन मे पति पत्नी एक दूसरे से खुलेआम विवाह पूर्व तथा विवाह पश्चात यौन सम्बन्धो को स्वीकारने में बिल्कुल नहीं झिझकते। पाश्चात्य देशो मे यौन सम्बन्धो को मुक्त रूप मे देखा जाता है। परन्तु भारतीय समाज मे यौन संबंधो के बारे मे बात करने मे भी स्त्री झिझकती है। कहानी की नायिका 'रानी' अपने पति की कुरूपता तथा हमेशा उसके प्रति उदासीनता रखने के कारण परपुरुष 'शेखर' की ओर आकृष्ट हो जाती है। रानी की यौन भावनाए संतुष्ट नहीं हो पाती वह सदैव पति प्रेम को पाने के लिए तड़पती रहती है। रानी का अपना पति होने के बाद भी परपुरुष की ओर आकृष्ट होना पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव है। 'दो कलाकार' कहानी की नायिकाएँ 'चित्रा' और 'अरुणा' पाश्चात्य और भारतीय संस्कृति दोनों का प्रतिनिधित्व करती है। चित्रा बाढ़ पीड़ितों के दृश्य को कागज पर उतारती है। भारत की गरीबी, बेकारी, लाचारी, असहाय और पीड़ित लोगो के चित्र, यहां की गंदगी, पेड़ के नीचे मरी पड़ी भिखारिन और उसके रोते बिलखते बच्चो का स्केच उतारकर विदेश ले जाती है। वहां जाकर वह अत्यधिक ख्याति अर्जित करती है, जबकि अरुणा एक समाजसेविका है। चित्रा ने जिन अनाथ बच्चो का चित्र उतारकर ख्याति अर्जित की उन्ही बच्चो को गोद लेकर सभ्य नागरिक बनाने का काम अरुणा ने किया। इस

[1] मन्नू भंडारी, दीवार बच्चे और बरसात, मैं हार गई (कहानी संग्रह) पृ. सं. 94

कहानी में दोनों नारियो ने भारतीय और पाश्चात्य दोनों संस्कृति का उजागर किया है। 'तीन निगाहो की एक तस्वीर' की 'दर्शना' भी पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। भारतीय संस्कृति मे पति पत्नी का सम्बन्ध प्रगाढ़ बंधन माना जाता है। दर्शना अपने बीमार पति की सेवा करते - करते ऊब गयी है और अपनी शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किरायेदार की ओर आकर्षित हो जाती है। पति की मौजूदगी मे पराये पुरुष मे रूचि लेकर पति की नजरो मे कुलटा और दीदी की नजरो मे छिनाल बन जाती है। आधुनिक नारी प्राचीन काल की तरह किसी भी अंधे लंगड़े को पति परमेश्वर मानकर उसकी पूजा नहीं करती बल्कि वह अपने योग्य पति चाहती है। एक समय था जब बेटी डोली मे बैठ कर पति के घर जाती थी तो अर्थी निकलने तक अपने पति का घर नहीं छोड़ती थी। [2]परन्तु आज की नारी वैसी नहीं है। बदलते परिवेश के कारण स्त्री अपनी यौनतृप्ति के लिए पति के होते हुए भी पराये पुरुष की ओर आकर्षित होती है। 'घुटन' कहानी की 'मोना' विवाह पूर्व अपने प्रेमी 'अरूप' के साथ भाग जाने को तैयार है। भारतीय परिवेश मे माता पिता कितने ही गरीब क्यों ना हो वे अपनी बेटी के हाथ जल्दी से पीले करना चाहते है परन्तु प्रतिकूल परिस्तिथियों मे मोना की माँ उसके विवाह की उतनी चिंता नहीं करती जितनी कि उन्हें निराधार होने का भय है। परम्परागत समय मे भारतीय स्त्री पति की आज्ञा के बिना घर से बाहर पैर नहीं रखती थी। पति की आज्ञा का पालन उसका सर्वोपरि धर्म था किन्तु पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव के कारण आज स्त्री हर क्षेत्र में पुरुष से कंधे से कन्धा मिलाकर चलती है। परिणाम स्वरुप वह कभी कभी उसकी प्रतिदंद्वी भी बन जाती है। 'हार' कहानी की 'दीपा' भी अपने पति की तरह अपनी पार्टी के लिए तन, मन, धन सभी प्रकार से सहायता करती है। प्राचीन काल में पुत्र माता-पिता की सेवा करना अपना सर्वप्रथम धर्म मानते थे, परन्तु आज के समय में वे माता पिता के लिए अपनी इच्छाओ तथा सुख का पूरी तरह से दमन नहीं करना चाहते।[3] युवको की तुलना में युवतियां अपने माता पिता का ख्याल रखती है। क्षय कहानी की कंुती भी अपने पिता की सेवा तथा भाई के लिए अपना सम्पर्णू जीवन न्योछावर कर देती है। पाश्चात्य परिवेश के प्रभाव के कारण आज स्त्री परुुष का भेद कम होता जा रहा है। कामकाजी यवुती 'कुंती' पर पुरे परिवार की जिम्मेदारी है। लड़के लड़कियों को एक जैसा मानना, उन्हे एक ही तरह की शिक्षा देना आपस में मतभेद ना करना यह सब तो ठीक है, परन्तु उन्हे अर्थाजन का साधन मानकर बुढ़ापे का सहारा मानकर उनका विवाह ना करना पाश्चात्य संस्कृति को बोधित करता है। 'तीसरा आदमी' कहानी भारतीय और पाश्चात्य दाम्पत्य जीवन के मूल्यों की टकराहट हैं। प्राचीन जीवन मूल्यों के अनुसार किसी स्त्री का परपुरुष से एकांत में बात करना अवांछनीय समझा जाता था। यहां 'सतीश' का भारतीय मन अपनी पत्नी 'शकुन' पर शक तो करता है लेकिन पाश्चात्य मन उसके शक को प्रकट करने में असमर्थ है। आज के समय में स्त्री पुरुष संपर्क स्वाभाविक है। यह संपर्क व्यवसायिक होने से भी हो सकता है। ये सम्बन्ध नितांत औपचारिक होते है, परन्तु कभी - कभी परिस्तिथिवश पति पत्नी के बीच संदेह की स्तिथि उत्पन्न कर देते है। यह संदेह सुखी दाम्पत्य जीवन में भी दूरी ला देता है। नकली हीरे कहानी की बड़ी बहन सरन पाश्चात्य विचारो से प्रभावित है वह अपनी छोटी बहन इंदु को लेने स्टेशन इसलिए नहीं जाती क्योकि वह एक बहुत बड़े व्यापारी की पत्नी है, और उसकी बहन मामूली से स्कूल मास्टर की पत्नी। वह अपनी सहेली से कहती है - "भई, कुछ भी हो अपनी प्रेस्टीज और पोजीशन का कुछ तो ख्याल रखना ही पड़ता है। अब नौकर ड्राइवर सबके सामने वह थर्ड क्लास से उतरती.....या सेकंड क्लास में से ही उतरती..... मुझे तो बड़ा ऑकवर्ड लगता.....। उसे अपनी और अपने पापा की सम्पन्नता के सामने कुछ नजर नहीं आता है वह कहती है पर आदमी की पोजीशन भी तो कुछ होती है। कहां पापा एक बड़ी स्टेट के एक्स प्राइम मिनिस्टर और कहां एक फटीचर कॉलेज में पढ़ाने वाला! पांच सौ रूपये तो यह अपनी जेब खर्च के लिए लेती थी और अब इतने में सारी गृहस्थी चलानी पड़ती होगी। प्रेम का सारा नशा हवा हो गया होगा, रो रही होगी अपनी किस्मत को।" पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से उच्च वर्ग की महिलाओ का पार्टियों में जाना, नाचना, गाना, कीमती वस्त्र पहनना, और एक दूसरे को नीचे दिखने में औरो की चुगलियां करना आदि सभी आज के उच्च नारी वर्ग के शौक बनते जा रहे है।

'इनकम टैक्स और नींद' की 'महिमा' स्वतंत्र विचारो वाली युवती है। वह एलोपैथी की डॉक्टर है। वह डॉक्टरों के सेमिनार में शामिल होने के लिए अकेले ही जाती है। महिमा गाड़ी लेकर घूमने जाना, कांटे छुरी से खाना खाना इत्यादि उसकी जीवनचर्या है।[4] वह रूढ़ि परम्पराओ को बिल्कुल नहीं मानती। यहाँ तक कि वह शादी व्याह के लिए अपने माता पिता की राय जरूरी नहीं समझती वह कहती है - " मेरे बारे में? उसमें पिताजी क्या करेंगे? वह तो मैं खदु ही कर लुंगी।" महिमा पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित है। वह खुले तौर पर कह देती है कि वह स्वयं अपनी मर्जी से विवाह करेगी।

'रानी माँ का चबूतरा' कहानी की 'गुलाबी' ऐसी स्त्री है, जो भारतीय परम्परागत रूढ़ियों को तोड़ती है। गुलाबी अपने शराबी पति को घर से बहार निकाल देती है और अपने बच्चो का भरण पोषण स्वयं अपने बल - बूते करती है। पूरे गावं वह अकेली स्त्री है जो कि रानी माँ के चबूतरे पर दिया नहीं जलाती। यहाँ 'गुलाबी' पारम्परिक ढांचो पर तीखा प्रहार करती है। 'यही सच है' कहानी भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का मिश्र स्वरुप है। इस कहानी में अशरीरी प्रेम को अस्थायी सिद्ध किया गया है जबकि किर्यात्मक शारीरिक प्रेम को अधिक पोषण किया है। 'दीपा' का 'निशिथ' से प्रेम अंतर्मुखी होने के कारण पूर्णता अभिव्यक्त नहीं हो पाता और 'संजय' के साथ शारीरिकता के कारण अधिक ठोस और व्यवहारिक सिद्ध होता है। पाश्चात्य सभ्यता में विवाह पूर्व संबंधो को अनैतिक नहीं माना जाता। वहां खुलेआम इन विषयो पर चर्चा होती है। दीपा पूर्ण रूप से पाश्चात्य संस्कृति से ओत - प्रोत है।

भारतीय परम्परा में स्त्री पति के पूर्व प्रेम को स्वीकार करके जी लेती थी और सब कुछ सह लेती थी, परन्तु आज की स्त्री इस को चुनौती देती है। 'बंद दरजो का साथ' की 'मंजरी' 'विपिन' के पूर्व प्रेम को भुलाने को तैयार थी, परन्तु आज भी वह उस सम्बन्ध को निभाए यह उसे मान्य नहीं है। वह अपने पति विपिन से अलग हो जाती है और पुनः 'दिलीप' नामक युवक से विवाह कर लेती है। यहाँ पुरानी रूढ़ियों का परित्याग करते हुए नारी को

[2] मन्नू भंडारी, नकली हीरे - यही सच है (कहानी संग्रह) पृ. सं. 73

[3] मन्नू भंडारी, नकली हीरे - यही सच है (कहानी संग्रह) पृ. सं. 74

[4] मन्नू भंडारी, इनकम टैक्स और नींद - यही सच है और अन्य कहानियां (कहानी संग्रह) पृ. सं. 116

उसके वास्तविक यथार्थ रूप में अभिव्यक्त किया गया हैं। आज की नारी पुराने रोने नहीं रोती वह जीवन में आगे बढ़ती है। यह सब पाश्चात्य संस्कृति को झलकता है।

'बाहों का घेरा' कहानी में पति पत्नी के बीच परस्पर सामंजस्य स्थापित ना होने के कारण 'कम्मो' शारीरिक तथा मानसिक यातनाओ से घिरी हुई है। कम्मो अपने व्यवसायी पति से प्रेम की कामना करती है, परन्तु उसका पति व्यवसाय की उन्नति के लिए पत्नी के मनोाावनाओं को नहीं समझना चाहता। अंग्रेजी शिक्षा पद्धति ने परम्परागत मूल्यों को उपहास का विषय बना दिया है। सिनेमा, क्लब, रोमंसी जीवन, मादक पदार्थो का सेवन ये सब आम बाते हो गई है। भोग-विलास और स्वछंदता ने परिवारों को तोड़ दिया है। दाम्पत्य जीवन में तनाव उत्पन हो जाते है और बिखराव की शुरुआत हो जाती है।

'ऊंचाई' कहानी पूर्ण रूप से पाश्चात्य दाम्पत्य सम्बन्धो को व्यक्त करती है। कहानी की नायिका 'शिवानी' अपने पति 'शिशिर' के होते हुए विवाह पूर्व प्रेमी 'अतुल' से शारीरिक सम्बन्ध बनाने में जरा भी नहीं झिझकती और इसे वह गलत भी नहीं मानती। इस कहानी में भारतीय दाम्पत्य जीवन की मान्यताओं को ताक पर रख दिया है। भारतीय दाम्पत्य जीवन में कभी भी ऐसा नहीं होता कि एक विवाहित स्त्री अपने पति के सामने अपने प्रेमी या परपुरुष से शारीरिक सम्बन्धो की बात निसंकोच इतने स्पष्ट रूप से कह सके और अपना अपराध भी स्वीकार ना करे। शिशिर भी शिवानी को माफ कर दाम्पत्य जीवन में आगे बढ़ता है। यहां शिवानी को अति आधुनिक बताया गया है। भारतीय समाज की नारी पुरुषो के अत्याचार को चुपचाप सहन करती है, वैसा पाश्चात्य परिवेश की नारी नहीं करती। वह स्वयं को पुरुष के बराबर समझती है। जिस प्रकार पुरुषो के पर स्त्री सम्बन्ध होते है ठीक उसी प्रकार स्त्री भी पर पुरुष सम्बन्ध बनाने में नहीं झिझक रही है। भारतीय परिवेश में युवा अवस्था में पहले युवक -युवतियां एक दुसरे से बात तक नहीं करते थे। किशोरावस्था में लड़के लड़कियों में क्षणिक उत्तेजनावश अनुभव को प्राप्त करने की जिज्ञासा से यौन सम्बन्ध स्थापित हो जाने का डर था। जिसका परिणाम दोनों के लिए दुखद होता है। 'आते-जाते यायावर' में पुरुष प्रकृति से यायावर है। 'मिताली' अविवाहित प्राधियापिका है। उसके सहपाठी ने प्रेम के नाम पर उससे शारीरिक सम्बन्ध स्थापित कर विवाह किसी और युवती से कर लिया। तब से मिताली तटस्थ रहना चाहती है, परन्तु उसका परिचय 'नरेन'् से हो जाता है जो कि अमेरिकन पत्नी से विवाह विच्छेद कर भारत लौट आया है। मिताली पुनः नरेन् के साथ प्रेम में पड़ जाती है। नरेन् द्वारा मिताली का रोमांटिक भाव बोध का क्रूर मजाक होने के बाद भी वह टूटे सम्बन्धो में भविष्य की सम्भावना खोजती है। पुरुष प्रकृति से ही यायावर प्रवृति के होते है।

एक समय था जब भारतीय नारी सिर्फ घर तक ही जीती थी उसे बहार की दुनिया से कोई लेना देना ना था, परन्तु आज स्त्री घर से बहार जाकर नौकरी करती है। वह पुरुषो के संपर्क में भी आती है। कभी कभी उसे पुरुषो की वासना का शिकार भी होना पड़ता है। कुछ बॉस ऐसे होते है जो युवती कर्मचारी की मजबूरी का फायदा उठाते है। वे उन्हें पत्नी का दर्जा मान सम्मान नहीं देते बल्कि अपनी वासना को पूर्ण करने के लिए उनका उपयोग करते है।[5] 'स्त्री सुबोधिनी' कहानी में एक शिक्षित कामकाजी अविवाहित महिला है। जो कि अपने ऑफिस के विवाहित बॉस 'शिंदे' के प्रेम जाल में फंस जाती है। शिंदे जो सामाजिक रूप से प्रतिष्ठित, व्यवहारिक और दुनियादार व्यक्ति है जो युवा को प्रेम करने, सपनो के टूटने और छले जाने का बखान करता है। यहां दो नावों में एक साथ सवार व्यक्ति के चरित्र को दर्शाया है। यहां मर्द के छलावे के अलावा ठगी हुई प्रेमिका की कहानी है। प्रेम के इस खेल में वह एक सधे हुए खिलाडी की तरह खेला और मैं निहायत अनाड़ी की तरह। आठ साल से चल रहा प्रेम, प्रेम न होकर एक खिलवाड़ था जिसकी बाजी होशियार शिंदे के हाथ में थी।

"तुरुप का इक्का यानि घर..... उसके पास

तुरुप का बादशाह यानि बच्चा ..... उसके पास

तुरुप की बेगम यानि बीवी और प्रेम करने के लिए प्रेमिका.....उसके पास[6]

तुरुप का गुलाम यानि नौकर-चाकर, बांग्ला-गाड़ी .....उसके पास लब्बो - लुवाब यह है कि तुरुप के सारे पत्ते उसके पास ....और मुझे मिले उसके दिए हुआ छक्के-पंजे, यानि टोटके की तरह पुड़िया में बंधे, दार्शनिक लफ्फाजी में लिपटे हवाई प्यार के चंद जुमले। इन टटपुँजियां पत्तों के सहारे मैं ज्यादा से ज्यादा इतना ही कर सकती थी कि जिन्दगी भर उसकी पूंछ पकड़े रहती और उसे ही अपनी उपलब्धि समझ-समझ कर संतोष करती। मन बहुत घबराता तो उसी पूंछ से हवा करके उसके साथ बिताए मधुर क्षणों पर जमी समय की धूल उड़ाकर कुछ समय के लिए खालीपन भर लेती।" इस प्रकार एक विवाहित पुरुष द्वारा छली गए स्त्री को दर्शाया है। और उन्ही के शब्दों में - "भूलकर भी शादीशुदा आदमी के प्रेम में मत पड़िए। दिव्य और महान प्रेम की खातिर बीवी-बच्चों को दाव पर लगाने वाले प्रेमवीरों की यहां पैदावार ही नहीं होती। हाँ दो नाव पर पैर रखकर चलने वाले शूरवीर जरूर शरेआम मिल जाएंगे।" इस कहानी से वे समाज में एक कामकाजी नारी पर हो रहे अत्याचार का ब्यौरा है। यह कहानी स्त्रियों के लिए सुबोधिनी का ही काम करती है।

यह सब कुछ पाश्चात्य संस्कृति की देन है। रस्मो रिवाजो और विचारो के स्तर पर आधुनिक बनने की चाहत को व्यंजित करना मन्नू भंडारी की कहानी 'त्रिशंकु' का मुख्य आधार है। मनुष्य संस्कारो और आधुनिकता के जाल में इस कदर फंसा हुआ है कि उसकी स्तिथि अधर में लटके त्रिशंकु सी हो गई है। 'तनु' की मम्मी घर वालो से विरोध करके प्रेमविवाह करती है। जिसका जिक्र वो यदाकदा अपनी बेटी से करती है। वह तनु को पूर्ण रूप से

[5] मन्नू भंडारी, स्त्री सुबोधिनी - त्रिशंकु (कहानी संग्रह) पृ. सं. 41

[6] मन्नू भंडारी, स्त्री सुबोधिनी - त्रिशंकु (कहानी संग्रह) पृ. सं. 41

स्वतंत्रता देना चाहती है। लड़को को अपने घर बुलाती है। अपनी बेटी से मित्रता कराती है। यह सब कुछ पाश्चात्य संस्कृति की ओर बढ़ावा देता है। उस पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं लगाते परन्तु जब तनु और 'शखेर' के प्रेम सम्बन्धो के बारे में पता चला तब वह दुविधा में पड़ जाती है।

इस प्रकार कहना उचित होगा कि लेखिका की कहानियां पाश्चात्य पुट लिए हुए है। इनके नारी पात्र पम्परागत रूढ़ियों को तोड़ते हुए आधुनिकता की ओर बढ़ रहे है। इनके पात्र विवाह, रीती रिवाज, रस्मो को छोड़ कर अपना जीवन अपनी शर्तो पर जीने के लिए अग्रसर है। मन्नू भंडारी के नारी पात्र भारतीयता को अपनाते हुए पाश्चात्य की ओर लालायित है। कही तो वे पुरे तरह से पाश्चात्य हो चुके है, जैसे ऊंचाई की शिवानी और कही भारतीयता और पाश्चात्य संस्कृति के अधर में लटके हुए त्रिशंकु के सामान हो गए है। हम यही कह सकते है कि नारी जब चारो तरफ से टूट जाती है तब सभी सीमाओं को लाँघ देती है। फिर चाहे वह भारतीयता हो या पाश्चात्यता।